।। इस्लाम का मर्म वेदों में है ।।

अरबी–शायर लबी–बिन–अख्तब बिन तुफा ने नमूने के तौर पर पाँच शेर पेश किये है । जिस समय मैंने उनको पढा ; मैं सच कहता हूँ, मैं सक्ते की हालत में आ गया यानि स्तब्ध रह गया और पन्द्रह बीस मिनट के लिये अपनी दुनिया से ही कहीं दूर चला गया । यह कितना चमत्कारी और विस्मयकारी तथ्य है कि जो अरब वैदिक धर्म का अनुयायी और वेदों को मानने वाला था उसको कुछ पेशेवर या राजनीति से त्रस्त इतिहासकारों ने सेमिटिक सभ्यता का पुजारी प्रमाणित किया है । वह पाँच शेर यह हैं :–

१) ''अया मुबारक–अल–अर्जे युशत्नीहा बिनअलहिन्द ।
व अरदिकल्लाह यन्नज़िजल ज़िक्रतुन ।।''

अर्थात – हे भारत की पुण्यभूमि ! तू स्तुति करने योग्य है क्योंकि अल्लाह ने अपने अलहाम (=दैवी–ज्ञान) का तुझपर अवतरण किया है ।

२) ''वहल बहल युतुन अैनक सुबही अरब अत ज़िक्रू ।
हाज़िही युनज्ज़िल अर रसूलु मिन–आल–हिन्दतुन ।।''

अर्थात– वे चार अलहाम (ग्रँथ) जिनका दैवी–ज्ञान ऊषा के नूर के समान है हिन्दूस्तान में खूदा ने अपने रसूलों पर नाज़िल किये हैं (=हृदय में प्रकाशित किये हैं)।

३) ''यकूलून–अल्लाहा या अहल–अल–अर्ज़े आलमीन कुल्लुहम ।
फत्रबाऊ जिक्रतुल वीदा हक्कन मालम युनज्ज़िलेतुन ।।''

अर्थात – अल्ला ने तमाम दुनिया कें मनुष्यों को आदेश दिया है कि वेद का अनुसरण करो जो नि:संन्देह मेरी ओर से नाज़िल हुये हैं ।

४) ''व हुवा आलमुस्साम वल युजुर मितल्लाहि तन्ज़ीलन ।
फ़–ऐनमा अख़ीयू तबिअन् ययश्शिबरी नजातून ।।''

अर्थात – वह ज्ञान का भण्डार साम और यजुर हैं जिनको अल्लाह ने नाज़िल किया है । बस, हे भाईयो । उसी का अनुसरण करो जो हमें मोक्ष का ज्ञान (बशारत) देते हैं ।

५) ''व इस्नैना हुमा रिक् अथर् नासिहीना अख़्वतुन् ।
व अस्नाता अला ऊदँव व हुवा मशअरतुन् ।।''

अर्थात – इतमें से दो ऋक्. और अथर्व हैं जो अपने भ्रातृत्व (एकत्व) का ज्ञान देते हैं । ये कर्म के प्रकाश स्तम्भ हैं । हमें आदेश देते हैं कि हम अनपर चलें ।

इन शेरों का अर्थ समझने के लिये मुझे किसी टीका टिप्पणी की जरुरत नहीं है क्योंकि भारत क्या सारे संसार का बच्चा बच्चा वेदों के ज्ञान से भली भाँति परिचित है । एक एक शब्द से यह स्पष्ट हो रहा है कि महाकवि लबी-बिन-अरव्तब बिन तुर्फा का वेदों पर पूर्ण विश्वास था और वेदों के प्रति उनके हृदय में सच्चे-प्रेम और श्रध्दा की भावना विद्यमान थी। ये शेर आज से लगभग ३७५० (तीन हजार सात सौ पचास) वर्ष के हैं । इससे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के इस कथन की भी पुष्टि हो जाती है कि महाभारत के समय तक आर्य सभ्यता और वैदिक धर्म का झण्डा सारे विश्व पर लहरा रहा था ।

।। वेदों की प्रशंसा ।।

इन शेरों में स्वष्टत वेदों की ही स्तुति की गई है ओर जितने भी कसीदे मिले हैं वे सब के सब इसके बाद के हैं । वे हजरत मौहम्मद साहिब से एक हजार र्वष पूंव से इधर उधर के हैं और उनमें वेदों के स्थानपर पौराणिक सिंध्दातो (=उसूलों) और देवी-देवताओं तथा अवतारो एवँ मूर्तिपूजा इत्यादि के बारे में ही लिखा गया है । इससे यही प्रमाणित होता है कि बौध्दधर्म के प्रादुर्भाव के बाद भी जब भारतवर्ष में मूर्तिपूजा का प्रचार-प्रसार हुआ तब भी यहाँ के विद्वान और उपदेशक समय समय पर दूसरे देशों में जा जाकर अपने धर्म का प्रचार करते रहे थे । मुझे अरब के परिवर्ती-कवियों की ऐसी ऐसी कविताये भी मिली हैं जिनके अध्ययन-मनन से नि:सन्देह इस बात का प्रमाण मिल जाता है कि भारत वर्ष के विद्वान और उपदेशक समय समय पर अरब देश में पहुँचते रहे हैं ।

काहिरा के सार्वजनिक-पुस्तकालय में मुझे एक ऐसा कसीदा मिला है जो अजिज़-बिन हमजा का लिखा हुआ है । यह कवि पैग़म्बरे-इस्लाम हज़रत मौहम्मद साहिब से करीब तीन सौ वर्ष पूर्व अरब में पैदा हुआ था । उसने अपने कसीदे में इस बात की स्पष्ट चर्चा की है कि हम अज्ञान और सभ्यता के अंधकार में फँसकर सत्यधर्म से दूर जा पड़े थे । ऐसे समय में भारत के चक्रवर्ती सम्राट राजाधिराज वीर विक्रमादित्य ने कृपा करके दो पवित्रात्माओं को यहाँ भेजा था जिन्होंने सत्य और धर्म का मार्ग दिखाकर हमारे अज्ञान (=जहालत) को दूर किया था । इससे प्रमाणित होता है कि भारतवर्ष के धर्म-प्रचारकों का विदेशों में जा जाकर धर्मप्रचार करने का क्रम कभी भी मंद नहीं पड़ा था ।

बौध्दधर्म के बाद भी भारत वर्ष में जब अवतारवाद और नवीन वेदांत-मार्ग इत्यादि का प्रचार हुआ तब उसके प्रचारक भी अरब आदि देशों में धर्म-प्रचार के उद्देश्य से जाते रहे थे । यहाँ तक कि हजरत मोहम्मद के जन्म के समय अरब के रहनेवाले वाममार्ग के पक्के-अनुयायी बन चुके थे और उनको यह विश्वास हो चला था कि मोक्ष का मार्ग मदिरापान, मांसभक्षण, भोगविलास इत्यादि जिनके विरुध्द स्वयँ हजरत मोहम्मद ने आवाज उठाई थी । यह ऐतिहासिक प्रमाण है कि हजरत मौहम्मद के जन्म तक अरब और हिन्दुस्तान का सम्बन्ध बराबर बना रहा था जिसका प्रमाण अबुल हकम बिन हशाम के वे शेर हैं जो ऊपर उध्दत किये जा चुके हैं और जिनमें उस कविने भगवान से प्रार्थना की है कि वह समय शीघ्रतिशीर्घ आवे जब उसे हिन्दुस्तान के दर्शन करने का सौभाग्य मिले । हिन्दुस्तान के

दर्शन करने के लिये इतनी उत्सुकता इस सच्चाई का प्रमाण है कि वे लोग हिन्दुस्तान को बड़ी श्रध्दा से देखते थे । जब हिन्दुस्तान और यहाँ के प्रति उनक हृदय में इतनी श्रध्दा थी तो यहाँ पर होने वाले परिर्वतनों और वैचारिक व धार्मिक क्रान्तियों का उनपर प्रभाव पडना स्वाभाविक ही था । जब अविद्या के अंधकार में फँसकर भारतवासी शुध्द और पवित्र वैदिक सिध्दातों को छोड़ बैठे और वेदों के स्थान पर पुराणों व तंत्रो इत्यादि क ग्रन्थों को मान्यता देने लगे तब इस परिवर्तन का जरुरी परिणाम यह होना ही था कि वे सब दूसरे देश जो भारत को अपना गुरु और पथप्रदर्शक मानते थे और हर बात में उसका अनुसरण करते थे इस परिवर्तन में भी उनका अनुसरण करते । परिणाम यह हुआ कि वहाँ यानि अरब में भी मूर्तिपूजा आदि का प्रचार-प्रसार इस हद तक हुआ कि अरब के लोग मूर्तियों और मूर्तिपूजा को ही मोक्ष का मार्ग समझने लगे । अहिंसा की जगह हिंसा ने लेली और भागवान को खुश करने के लिये मूक-पशूओं तथा निर्दोष-मनुष्यों तक की बलि चढाई जाने लगी । जड़ भरत की बलि चढाना तथा राजा रन्तिदेव की पूजा बलि इस तथ्य के पक्के प्रमाण भारत में भी पाये जाने लगे । तब र्चमण्यवती नदी पशुओं के रक्त से ही तो बनी थी ।

।। इस्लाम हिन्दूत्व का ऋणी है ।।

में हजरत मौहम्मद से ५०० या ५५० वर्ष पूर्व का एक कसीदा उध्दत करता हूँ । यह अरब का वह समय था जब वहाँ मूर्तिपूजा और अवतारवाद पूरी तरह से छाया हुआ था और देवी-देवताओं की पूजा गाँव गाँव और घर घर में होती थी । उस समय पूजा में हजारों पशूओं का प्रतिदिन खून बहाया जाता था । यहाँ तक कि विशेष अवसरों और पर्वो पर मनुष्य की बलि से भी परहेज नहीं किया जाता था क्योंकि उसका अत्यन्त पुण्यकर्म समझा जाता था । यह कसीदा कुस्तुन्तुनिया से सरकारी सार्वजिनक पुस्तकालय में आज भी सुरक्षित रखा हुआ है । किन्तु जनतंत्री शासन की स्थापना के बाद इसका जन-सर्मपण कर दिया गया है । कुस्तुन्तुनिया विश्वविद्यालय हाल के पास ही एक भव्य शाही महल है जिसे किसी पूर्व सुलतान ने अपनी चहेती बेग़म के लिये बनवाया था । अब वही महल पुस्तकालय के प्रयोग में लाया जाता है । उक्त कसीदा उसी पुस्तकालय में रखा हुआ है । इसका समय करीब बारह सौ पचास वर्ष पूर्व का है । इसको खलीफा इब्न अब्दुल मुल्क अमवी ने अपने समय में किसी युनानी उस्ताद से लिखवाया था । यह कसीदा रुप और लेखन-सौन्दर्य की दृष्टि से भी एक दुर्लभ और दर्शनीय वस्तु है । इसके ग्यारह पन्ने है । जिनको पुस्तक के रुप में एक साथ संकलित कर लिया गया है । इसकी रुपसज्जा और शिल्पसौन्दर्य का वर्णन कैसे करुँ । यह सम्भव ही नहीं है कि इसकी वास्तविक सुन्दरता और शिल्पकला का लेखनी के द्वारा दर्शन कराया जा सके । स्वर्ण के पतले वर्क कागज से कुछ ही मोटे हौंगे । दो दो को आपस में जोड़ दिया गया है और बीच में लाल रंग का चमड़ा दिया गया है और पत्रों के दौनो और इस तरह कटाई की गयी है कि उससे अक्षर बनते चले गये

हैं । अर्थात् पत्रों के बीच लाल चमडा लगा हुआ है इसलिये दौनो तरफ के कटे हुये अक्षर साफ और स्पष्ट दिखलाई देते हैं । जैसे कागज पर दौंनो ओर लिखा हुआ होता है । इसके अतिरिक्त हाशिये पर दौनो और जो अद्‌भुत बेल–बूटे बनाये गये हैं वे देखने योग्य हैं । कुछ बेल–बूटे तो इतने बारीक है कि लेखनी के काम से उसकी सुन्दरता को चार चाँद लग गये हैं । इन पत्रों का विस्तृत इतिहास सुलतान सुलेमान–ए–आजम, जो कि तुर्की का विख्यात बादशाह हो चुका है के समय की तुर्की–भाषा में लिखा हुआ है और पत्रों के साथ लगा हुआ है । मैं यहाँ उनकी नकल न करके केवल इतना ही बताना चाहता हूँ कि खलीफ़ा–इब्न–अब्दुल्मूल्क एक अरबी (=देहाती) से किसी प्राचीन अरबी– कसीदे के कुछ शेर सुनकर इतना प्रसन्न हुआ और उसे कुछ ऐसा शौक पैदा हुआ कि उसने अपने कुछ दरबारी कवियों को विशेष रुप से इस काम के लिये हजाज़ रवाना किया ताकि वे वहाँ के क़बीलों में घूम फिर कर प्राचीन कवियों की कविताओं को एकत्रित करें । अत: दो वर्ष के सतत प्रयासों और परिश्रम के साथ खोज करने के बाद सात पूरे कसीदे और एक सौ से भी अधिक फुटकर शेर प्राप्त हुये जिनको बादशाह अब्दुल्मुल्क ने एक विशिष्ट युनानी या सरदीन कलाकार से लिखवाया था ।

।। शेष कसीदे ।।

इस संकलन में तीसरे नम्बर पर जो कसीदा लिखा गया है उसके कुछ शेर में यहाँ उध्दत कर रहा हूँ । स्थानाभाव के कारण सम्पूर्ण–कसीदा उध्दत करना बेकार की बात होगी । यह कसीदा आर–बिन–अंसबिन–मिनात का है जिसका समय सैरुलकूल के अनुसार हजरत–मौहम्मद साहिब से लगभग तीन सौ र्वष पूर्व और उक्त लेख (पत्रों) में उनसे चार सौ वर्ष पूर्व दिया हुआ है । इसमें कवि ने अपने सच्चे भगवान की सच्ची आराधना की है और उसके अद्‌भुत कार्यों और अद्वितीय शक्तियों की स्तुतियाँ की हैं । इन शेरों से यह पता तो नहीं चलता है कि अरब के लोग उस देवता का स्मरण किस नाम से करते थे किन्तु कसीदे में जिन गुणों, शक्तियों और अद्‌भुत कार्यों का वर्णन किया गया है वे सबके सब भारतवासियों के लिये कोई नयी और अनौखी बात नहीं है क्योंकि हर हिन्दू बच्चा सबबातों को सुनकर तुरन्त यह बता सकता है कि भारतवासी यह गुण किस देवता में देखते और मानते हैं । लेकिन यह याद रहे कि उस कविकोविद ने उसको ईश्वर (=खुदा) मानकर उसका वर्णन किया है उस कवि कोविद ने यह भी माना है कि मानवों के दुख हरण करने के लिये और नास्तिकता के विनाश के लिये मानव के रुप में उसका अवतरण युग युग में होताही है । यह कहता है :–

१) जा इनाबिल अम्रे मुकर्रमतुन फिद्दनिया इलस्समाए व मुखज़िल काफिरीना कमा यकूलून फ़िलकिताबन ।

अर्थ :– हे मेरे स्वामी आपने अपनी असीम कृपा से जो इस संसार के लिये अवतार लिया ज्बकि

पापियों ने इस पर कब्जा कर रक्खा था, जैसा कि आपने स्वयँ अपने ग्रंथ में कहा है ।

२) आयैन आयैन तबअरत दीन-अस्सादिक़ फ़िल-इन्स । जाअत तबर्रल मूमीनीना व तत्तखि ज़लकाफिरीन शदीदन ।।

अर्थ :- जब जब इस संसार में धर्म की कमी होती है और पाप बढ़ जाता है तब तब भक्तो की रक्षा और पापियों को दण्ड़ देने के लिये मैं जन्म लेता हूँ ।

नोट :

यह बात (=सिध्दांत) हिन्दूधर्म के अवतार के अवतारवादी की रीढ की हड्डी है जिसके सहारे सम्पूर्ण - हिन्दुत्व खड़ा हुआ है । देखिये :-

१) फिल्मीगीत - जिसे गायक हेमन्त गाते हैं :-

जब जब होता नाश धरम का, और पाप बढ़ जाता है
तब लेते अवतार प्रभू तब विश्व शांति पाता है ।।

२) तुलसीदास ''श्रीरामचरित्रमानस'' में लिखते हैं -

''जब जब होय धरम की हानी । बाढहिं असुर करैं मनमानी ।।
तब तब प्रभू धर मनुज सरीर । मारहि दैत्य असुर रणधीरे ।।''

३) महाभारत कें गीताभाग में वेदव्यास लिखते हैं -

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्मवामि युगे युगे ।।''

अर्थ - हे भारत ! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृध्दि होती है, तब तब ही मैं अपने रुप को रचता हूँ अर्थात् साकार रुप से लोगों के सन्मुख प्रकट होता हूँ । साधु-पुरुषों का उध्दार करने के लिये, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिये और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिये मैं युग युग में प्रकट हुआ करता हूँ । —गीता, अध्याय ४ श्लोक ७ व ८

- डॉ. रसिक बिहारी मंजुल